आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

मानव जीने के आयामों में सहअस्तित्ववादी शिक्षा की भूमिका: एक दार्शनिक विवेचना

सोनिका
शोध छात्र, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
dpsharma115@gmail.com
एवं
सुरेन्द्र पाठक
प्रोफेसर, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
pathak06@gmail.com @gmail.com

शोध सारांश

वर्तमान युग में मानवता की समस्याओं का मूल कारण शिक्षा में सह-अस्तित्व की समझ का अभाव है। अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझना: मध्यस्थ दर्शन के अनुसार अस्तित्व सह-अस्तित्व है, यानी हर इकाई अन्य इकाइयों के साथ एक सुसंगत व्यवस्था में मौजूद है। मानवीय शिक्षा को इसी सह-अस्तित्व की समझ पर आधारित होना चाहिए। यह दृष्टिकोण केवल ज्ञान को नहीं, बल्कि जीवन जीने के तरीके को भी प्रभावित करता है, जिससे समाज में प्रेम, न्याय और सद्भाव स्थापित हो सकता है। मध्यस्थ दर्शन के पाँच सिद्धांत शिक्षा के लिए एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। मध्यस्थ दर्शन के पांच मूलभूत सिद्धांतों के आधार पर एक नवीन शैक्षिक दर्शन प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमें अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझना, चार अवस्थाओं की व्यवस्था, मानव को ज्ञान अवस्था के रूप में पहचानना, शिक्षा को चेतना विकास के रूप में देखना, और सार्वभौमिक मानव मूल्यों को शामिल करना है।

निश्चित रूप से मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में एकीकृत करने की क्षमता को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि यह दृष्टिकोण न केवल सैद्धांतिक है, बल्कि व्यावहारिक और भविष्योन्मुखी भी है। जीवन विद्या शिविर के सात-दिवसीय पाठ्यक्रम से प्राप्त अनुभव दर्शाते हैं कि यह दृष्टिकोण व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकता है। गणित, विज्ञान और इतिहास जैसे विषयों में सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का एकीकरण दिखाता है कि यूनेस्को (UNESCO) के शिक्षा के चार स्तंभों (जानना, करना, बनना और साथ रहना सीखना) के साथ मध्यस्थ दर्शन का तालमेल संभव है। भविष्य के अनुसंधान क्षेत्रों में न्यूरो-साइंस से लेकर पर्यावरण संरक्षण तक व्यापक संभावनाएं हैं।

मुख्य शब्द : मध्यस्थ दर्शन के पांच सिद्धांत, जीवन विद्या पाठ्यक्रम, व्यावहारिक शिक्षा उदाहरण, यूनेस्को (UNESCO) तुलना, भविष्य अनुसंधान

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की असफलता का मूल कारण यह है कि वह मानव को उसकी संपूर्णता में नहीं देखती। नागराज, ए. (2012) के अनुसार मध्यस्थ दर्शन के पांच मूलभूत सिद्धांत इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हैं। संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व के रूप में है – मध्यस्थ दर्शन (जीवन विद्या) या 'सह-अस्तित्ववादी दर्शन' एक नई खोज है, जो भारत के ए. नागराज द्वारा ध्यानात्मक 'साधना-समाधि-संयम' की पद्धति के माध्यम से की गई है (नागराज, 2012) यह सिद्धांत शिक्षा के लिए क्रांतिकारी है। जब हम यह समझते हैं कि प्रकृति में हर तत्व अन्य तत्वों के साथ सामंजस्य में है, तो शिक्षा का उद्देश्य भी इसी सामंजस्य को समझना और जीना बन जाता है। यह सिद्धांत सिखाता है कि हम सभी प्रकृति के एक बड़े हिस्से हैं और सभी जीव-जंतु, पेड़-पौधे और प्राकृतिक तत्व एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस समझ से एक-दूसरे के प्रति और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित होगी। शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम महसूस करें हमारा अस्तित्व सबके साथ जुड़ा हुआ है। यह सिद्धांतानुसार 'अस्तित्व मूलतः सह-अस्तित्व के रूप में है'। पदार्थ, प्राण, जीव, और ज्ञान अवस्था की समझ शिक्षा में विषयों के एकीकरण का आधार प्रदान करती है। भौतिक विज्ञान ,जीव विज्ञान , और मानविकी सभी एक ही तंत्र के अंग हैं। मध्यस्थ दर्शन केवल वैज्ञानिक ज्ञान को ही पर्याप्त नहीं मानता। यह विवेक और मानवीय मूल्यों के महत्व पर भी जोर देता है। शिक्षा में वैज्ञानिक ज्ञान के साथ-साथ सही-गलत का विवेक और जीवन के गहरे अर्थों की समझ को भी शामिल किया जाना चाहिए।

सर्वांगीण विकास (सर्वांगीण विकास-दर्शन): यह सिद्धांत शिक्षा को केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखता। इसका उद्देश्य छात्रों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास करना है। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो छात्रों को अपने जीवन को संतुलित तरीके से जीने के लिए तैयार करे।

मूल्य आधारित शिक्षा (मूल्य-दर्शन): शिक्षा को मानवीय मूल्यों जैसे कि न्याय, समानता, ईमानदारी और प्रेम पर आधारित होना चाहिए। ऐसी शिक्षा छात्रों को समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है, जो न केवल अपने लिए, बल्कि दूसरों के लिए भी सोचे (नागराज, 2012)।

मानव का स्वरूप ज्ञान अवस्था में है - यह सिद्धांत बताता है कि मानव की मूलभूत आवश्यकता ज्ञान है, भोजन या आश्रय नहीं। शैक्षणिक दर्शन के अनुसार "मानव प्राणी 'ज्ञान-अवस्था' के अंतर्गत आते हैं। हमारी मूलभूत आवश्यकता ज्ञान है" (मध्यस्थ दर्शन)। इससे शिक्षा की प्राथमिकताएं स्पष्ट हो जाती हैं। शिक्षा का उद्देश्य चेतना का विकास है - यह परंपरागत सूचना आधारित शिक्षा से अलग एक गुणात्मक परिवर्तन का सुझाव देता है। न्याय, दया, कृतज्ञता, प्रेम, वात्सल्य - ये पांच मूल्य शिक्षा के अंतिम परिणाम हैं, जो स्वाभाविक रूप से चेतना के विकास से आते हैं। (नागराज, 2012)

जीवन विद्या शिविर का व्यावहारिक मॉडल

जीवन विद्या शिविर का पाठ्यक्रम मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। जीवन विद्या (2024) के अनुसार, यह "7 दिवसीय कार्यशाला " एक संरचित प्रक्रिया है जो प्रतिभागियों को चेतना विकास के पथ पर ले जाती है। पहले दिन में परिचय और मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की समझ पर ध्यान दिया जाता है। यहाँ "मानव =

ज्ञान अवस्था" के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप में समझाया जाता है जिससे प्रतिभागी जान जाते हैं कि उनकी वास्तविक आवश्यकता क्या है।

दूसरे दिन मानव चेतना और मन की क्रिया-विधि पर चर्चा होती है जो "शिक्षा = चेतना विकास" के सिद्धांत का विस्तार है। मन की क्रियाओं की समझ जैसे इच्छा, विचार, आशा का विश्लेषण किया जाता है। तीसरे दिन पारिवारिक संबंधों की समझ को सार्वभौमिक मानव मूल्यों के पारिवारिक स्तर पर अनुप्रयोग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रेम, वात्सल्य, कृतज्ञता की व्यावहारिक समझ विकसित की जाती है। (नागराज, 2012)

चौथे दिन सामाजिक व्यवस्था और न्याय पर विचार होता है जो "अस्तित्व = सह-अस्तित्व" का सामाजिक संदर्भ में अर्थ स्पष्ट करता है। न्याय और दया के मूल्यों का सामाजिक अनुप्रयोग समझाया जाता है। पांचवे दिन प्रकृति और सह-अस्तित्व पर चर्चा में चार अवस्थाओं की प्राकृतिक व्यवस्था की समझ विकसित होती है और पर्यावरण संरक्षण का दार्शनिक आधार मिलता है। छठे दिन मूल्य और नैतिकता पर गहरा विमर्श होता है जिसमें सार्वभौमिक मानव मूल्यों की गहरी समझ और व्यावहारिक जीवन में उनके प्रयोग पर बात होती है। सातवें दिन समग्र जीवन दर्शन और भविष्य की दिशा तय करने में सभी पांच सिद्धांतों का एकीकृत रूप और जीवन में उनका समग्र अनुप्रयोग दिखाया जाता है।

यह पाठ्यक्रम दर्शाता है कि "शिक्षा = चेतना विकास" का सिद्धांत कैसे व्यावहारिक रूप ले सकता है। जीवन विद्या कार्यशाला के अनुसार "यह संवादात्मक 7 दिवसीय शिविर/कार्यशाला प्रतिभागी को अपने स्वयं और वास्तविकता के मूलभूत स्वरूप के बारे में पूछताछ करने के लिए तैयार की गई है" (मध्यस्थ दर्शन)। यहाँ सूचना देना नहीं, बल्कि समझ विकसित करना मुख्य उद्देश्य है। (नागराज, 2012)

सह-अस्तित्ववादी शिक्षा के व्यावहारिक अनुप्रयोग

गणित की शिक्षा में सह-अस्तित्व का सिद्धांत लागू करते समय गणित को केवल संख्याओं का खेल न मानकर, प्रकृति में व्याप्त व्यवस्था और सामंजस्य के रूप में सिखाना होता है। यह "अस्तित्व = सह-अस्तित्व" के सिद्धांत का गणित में अनुप्रयोग है। जब छात्र देखते हैं कि फिबोनाची श्रृंखला प्रकृति में फूलों की पंखुड़ियों में मिलती है, ज्यामितीय आकार क्रिस्टल संरचनाओं में दिखते हैं, और अनुपात तथा समरूपता में प्राकृतिक सामंजस्य है, तो गणित केवल अमूर्त विषय नहीं रह जाता, बल्कि सह-अस्तित्व की भाषा बन जाता है (Bhagwan, A. N. 2020)

विज्ञान में मानव केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने का अर्थ है भौतिक विज्ञान को केवल तकनीकी ज्ञान न मानकर, मानव कल्याण और प्राकृतिक संतुलन के संदर्भ में समझाना। यह "मानव = ज्ञान अवस्था" के सिद्धांत का अनुप्रयोग है जिसमें भौतिकी के नियम केवल सूत्र नहीं हैं, बल्कि प्रकृति के साथ मानव के संबंध की समझ हैं। रसायन विज्ञान पर्यावरण संरक्षण और मानव स्वास्थ्य से जुड़ा है, और जीव विज्ञान चार अवस्थाओं की संरचना को समझने का माध्यम है (Jain, A. N., 2009)।

इतिहास में सह-अस्तित्व की खोज करते समय इतिहास को केवल युद्धों और राजनीति का वर्णन न मानकर, मानवीय मूल्यों के विकास की कहानी के रूप में प्रस्तुत करना होता है। यह सार्वभौमिक मानव मूल्यों के सिद्धांत का इतिहास में अनुप्रयोग है जिसमें सभ्यताओं का विकास न्याय की खोज की कहानी है, सांस्कृतिक परंपराएं दया और प्रेम के विकास को दर्शाती हैं, और मानव प्रगति वास्तव में चेतना विकास की प्रक्रिया है।(Bhagwan, 2020; Jain, 2012; Toynbee, 1946)।

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में प्रासंगिकता

यूनेस्को के शिक्षा के चार स्तंभ और मध्यस्थ दर्शन के बीच प्राकृतिक तालमेल है। यूनेस्को (UNESCO, 1996) द्वारा प्रतिपादित "शिक्षा: अंतर्निहित खजाना" रिपोर्ट के अनुसार चार स्तंभ हैं। पहला स्तंभ "सीखना कि कैसे जानना है" मध्यस्थ दर्शन में ज्ञान के रूप में परिभाषित है। "मानव = ज्ञान अवस्था" का सिद्धांत इसे पूरा करता है क्योंकि जानने की पद्धति अस्तित्व और सह-अस्तित्व की समझ पर आधारित है।(Bhagwan, 2020; UNESCO, 1996)।

दूसरा स्तंभ "सीखना कि कैसे करना है" मध्यस्थ दर्शन में विज्ञान के रूप में समझा जाता है। व्यावहारिक कौशल सह-अस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित हैं और तकनीकी शिक्षा भी मानव कल्याण से जुड़ी है। तीसरा स्तंभ "सीखना कि कैसे होना है" मध्यस्थ दर्शन में विवेक के रूप में प्रकट होता है। "शिक्षा = चेतना विकास" का सिद्धांत इसे पूरा करता है क्योंकि व्यक्तित्व विकास मूल्यों के आधार पर होता है। चौथा स्तंभ "सीखना कि कैसे साथ रहना है" मध्यस्थ दर्शन में सह-अस्तित्व के रूप में दिखता है। "अस्तित्व = सह-अस्तित्व" का मूल सिद्धांत इसका आधार है और सार्वभौमिक मानव मूल्य सामुदायिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।

दर्शन संक्षेप के अनुसार "यह दर्शन व्यापक है। यह मानव जीवन के सभी आयामों की जांच करता है और एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है" (जीवन विद्या, 2024)। यह तुलना दिखाती है कि मध्यस्थ दर्शन केवल भारतीय संदर्भ में नहीं, बल्कि वैश्विक शैक्षिक चिंतन के साथ तालमेल बिठाता है। पांच मूल सिद्धांत सार्वभौमिक हैं और किसी भी संस्कृति में लागू हो सकते हैं। (Bhagwan, 2020; UNESCO, 1996)

अनुसंधान की दिशाएं और भविष्य की संभावनाएं

सह-अस्तित्ववादी शिक्षा की प्रभावशीलता कैसे मापी जा सकती है, यह एक महत्वपूर्ण अनुसंधान प्रश्न है। इसके लिए चेतना विकास के मापदंडों का निर्माण, सार्वभौमिक मानव मूल्यों के व्यावहारिक प्रदर्शन का अध्ययन, और जीवन विद्या शिविर के पूर्व और पश्चात् व्यवहारिक परिवर्तनों का विश्लेषण आवश्यक है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार "यह समझ मानवीय जीवन में मूर्त रूप लेती है" (जीवन विद्या, 2024), जो दिखाता है कि परिवर्तन व्यवहार में दिखना चाहिए।(Bhagwan, 2020; Jain, 2012)

विभिन्न आयु समूहों के लिए इस शिक्षा पद्धति को कैसे अनुकूलित किया जा सकता है, इसमें बच्चों के लिए चार अवस्थाओं की सरल समझ, किशोरों के लिए "मानव = ज्ञान अवस्था" की गहरी समझ, और वयस्कों के लिए सह-अस्तित्व का व्यावहारिक अनुप्रयोग शामिल है। तकनीकी शिक्षा में सह-अस्तित्व के सिद्धांतों को शामिल करने के लिए इंजीनियरिंग में "अस्तित्व = सह-अस्तित्व" के सिद्धांत का अनुप्रयोग, कंप्यूटर साइंस में चेतना विकास की संकल्पना, और चिकित्सा शिक्षा में सार्वभौमिक मानव मूल्यों का स्थान निर्धारित करना होगा। (Bhagwan, 2020; UNESCO, 1996; Capra, 1996)।

इस दर्शन का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव भी एक महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्र है। तनाव कम करने में सह-अस्तित्व की भूमिका, अवसाद निवारण में मानव मूल्यों की प्रभावशीलता, और चिंता विकारों के लिए चेतना विकास आधारित चिकित्सा की संभावनाएं हैं।(Davidson & Begley, 2012; Bhagwan, 2020)। न्यूरो-साइंस और मध्यस्थ दर्शन के बीच संबंध में चेतना विकास की न्यूरो-साइंटिफिक पुष्टि, सह-अस्तित्व की समझ का मस्तिष्क पर प्रभाव, और मानव मूल्यों के अभ्यास से न्यूरोप्लास्टिसिटी में परिवर्तन का अध्ययन संभव है।(Siegel, 2007; Begley, 2007; Bhagwan, 2020)।

सह-अस्तित्ववादी शिक्षा का पर्यावरण संरक्षण पर प्रभाव में चार अवस्थाओं की समझ से पारिस्थितिकी संरक्षण, पर्यावरण शिक्षा में सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का प्रयोग, और जलवायु परिवर्तन के लिए मानव चेतना आधारित समाधान शामिल हैं। आर्थिक विकास में मध्यस्थ दर्शन की भूमिका में सह-अस्तित्व आधारित आर्थिक मॉडल, न्याय और दया के मूल्यों पर आधारित व्यापारिक नीतियां, और सतत विकास के लिए "मानव = ज्ञान अवस्था" का सिद्धांत उपयोगी हो सकता है।(Raworth, 2017; Bhagwan, 2020; Sen, 1999)।

व्यावहारिक कार्यान्वयन और चुनौतियां

शैक्षणिक संस्थानों में चरणबद्ध तरीके से इस व्यवस्था को लागू करना होगा। प्रारंभिक चरण में चुनिंदा विद्यालयों में जीवन विद्या शिविर का संक्षिप्त रूप, शिक्षकों के लिए पांच मूल सिद्धांतों की प्रशिक्षण कार्यशाला, और व्यावहारिक उदाहरणों का कक्षा में प्रयोग शामिल होगा। विस्तार चरण में अधिक संस्थानों में कार्यक्रम का विस्तार, चेतना विकास के मापदंडों का विकास और परीक्षण, तथा छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों से प्रतिक्रिया लेना होगा।

पूर्ण एकीकरण के चरण में पाठ्यक्रम में सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का पूर्ण समावेश, सभी विषयों में मानव मूल्यों का एकीकरण, और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मध्यस्थ दर्शन का समावेश करना होगा। एनपीटीईएल (NPTEL, n.d.) के अनुसार "व्यावसायिक नैतिकता की नींव के रूप में मध्यस्थ दर्शन" का विचार पहले से ही शैक्षणिक संस्थानों में चर्चा में है।

मुख्य चुनौतियों में वैचारिक प्रतिरोध है क्योंकि "अस्तित्व = सह-अस्तित्व" का सिद्धांत परंपरागत द्वैतवादी सोच के विपरीत है। इसके समाधान के लिए व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझाना, जीवन विद्या शिविर में प्रत्यक्ष अनुभव, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्धांतों की पुष्टि आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण की कमी भी एक चुनौती है क्योंकि "शिक्षा = चेतना विकास" के लिए नई शिक्षण पद्धति की आवश्यकता है। इसके लिए गहन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, निरंतर मार्गदर्शन और सहायता, तथा शिक्षकों के लिए मानव मूल्य आधारित प्रेरणा देनी होगी।

मूल्यांकन की समस्या भी महत्वपूर्ण है क्योंकि चेतना विकास और मानव मूल्यों का मापना कठिन है। इसके समाधान के लिए नवीन मूल्यांकन विधियों का विकास, गुणात्मक मापदंडों का निर्माण, और दीर्घकालिक अनुवर्तन अध्ययन आवश्यक है। (सिसोदिया , 2019) अपनी पुस्तक "शिक्षा" में इसी प्रकार की चुनौतियों पर चर्चा करते हैं।

अपेक्षित परिणाम और दीर्घकालीन प्रभाव

पांच वर्षों में अपेक्षित परिणामों में 1000 विद्यालयों में सह-अस्तित्ववादी शिक्षा का सफल कार्यान्वयन, 10,000 शिक्षकों का प्रशिक्षण पूर्ण होना, और 1 लाख छात्रों को जीवन विद्या की शिक्षा मिलना शामिल है। अनुसंधान उपलब्धियों में चेतना विकास के मापदंडों का सफल विकास, 50 अनुसंधान पत्रों का प्रकाशन, और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलना शामिल है। सामाजिक प्रभाव के रूप में भागीदार विद्यालयों में अनुशासन की समस्याओं में 50% कमी, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में 30% कमी, और सामुदायिक सहयोग में उल्लेखनीय वृद्धि की अपेक्षा है।

दस वर्षों के दृष्टिकोण में राष्ट्रीय स्तर पर पांच मूल सिद्धांतों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समावेश, सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में मध्यस्थ दर्शन का समावेश, और एक नई पीढ़ी का निर्माण हो सकता है जो सह-अस्तित्व में विश्वास करती है। वैश्विक स्तर पर 10 देशों में सह-अस्तित्ववादी शिक्षा कार्यक्रमों की शुरुआत, यूनेस्को द्वारा आधिकारिक मान्यता, और विश्व शिक्षा में एक नए प्रतिमान की स्थापना संभव है।

एवरीबडीविकी (EverybodyWiki, 2022) के अनुसार "संस्थानों की सूची जिन्होंने आधिकारिक तौर पर मध्यस्थ दर्शन की सामग्री को नियमित पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में शामिल किया है" पहले से ही तैयार हो रही है, जो इस दिशा में प्रगति को दर्शाती है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में जब मानवता अनेक संकटों से जूझ रही है, मध्यस्थ दर्शन के पांच मूल सिद्धांत एक व्यावहारिक और समग्र समाधान प्रस्तुत करते हैं। ये सिद्धांत केवल शैक्षणिक सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि जीवन जीने की एक पूर्ण पद्धति हैं। जीवन विद्या शिविर का सात-दिवसीय पाठ्यक्रम दिखाता है कि इन सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकता है। गणित, विज्ञान और इतिहास में व्यावहारिक उदाहरण प्रमाणित करते हैं कि यह दृष्टिकोण सभी विषयों में

प्रभावी है। यूनेस्को के चार स्तंभों के साथ तालमेल यह सिद्ध करता है कि मध्यस्थ दर्शन केवल स्थानीय नहीं, बल्कि एक वैश्विक आवश्यकता को पूरा करता है। यह दर्शन किसी भी संस्कृति, धर्म या राष्ट्र की सीमाओं से बंधा नहीं है। अनुसंधान के विविध क्षेत्र न्यूरो-साइंस से लेकर पर्यावरण संरक्षण तक दर्शाते हैं कि यह दर्शन न केवल शिक्षा को, बल्कि मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर सकता है।

समय आ गया है जब हमें सह-अस्तित्ववादी शिक्षा को व्यावहारिक रूप देना होगा। पांच मूल सिद्धांतों के आधार पर एक नई शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानवता की भविष्य की खुशहाली के लिए अनिवार्य है। जब अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझने की शिक्षा हर बच्चे तक पहुंचेगी, जब मानव को ज्ञान अवस्था के रूप में पहचानने का सिद्धांत हर कक्षा में पढ़ाया जाएगा, जब शिक्षा को चेतना विकास के रूप में देखने का लक्ष्य हर शिक्षक का मार्गदर्शन करेगा, और जब सार्वभौमिक मानव मूल्य हर व्यक्ति के जीवन में झलकेंगे, तभी हम एक सच्चे अर्थों में शिक्षित और सभ्य समाज का निर्माण कर सकेंगे।

नागराज (, 2008) के अनुसार "जीवन विद्या एक परिचय" में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह केवल एक शैक्षणिक प्रयोग नहीं है, यह मानवता के भविष्य के लिए एक आवश्यक कदम है। मध्यस्थ दर्शन के पांच मूलभूत सिद्धांत एक पूर्ण शैक्षिक दर्शन प्रस्तुत करते हैं जो अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझने से सभी विषयों को जोड़ने वाला सूत्र देता है, चार अवस्थाएं पाठ्यक्रम की संरचना प्रदान करती हैं, मानव को ज्ञान अवस्था के रूप में पहचानना शिक्षा की प्राथमिकता निर्धारित करता है, शिक्षा को चेतना विकास के रूप में देखना शिक्षण पद्धति तय करता है, और सार्वभौमिक मानव मूल्य शिक्षा का अंतिम लक्ष्य हैं। जीवन विद्या शिविर का सात-दिवसीय पाठ्यक्रम दिखाता है कि ये सिद्धांत केवल सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि व्यावहारिक रूप से लागू हो सकते हैं। यूनेस्को के चार स्तंभों के साथ तालमेल दिखाता है कि यह दर्शन केवल स्थानीय नहीं, बल्कि वैश्विक आवश्यकताओं को पूरा करता है। अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र इस दर्शन की व्यापकता और गहराई को दर्शाते हैं।

यदि पांच मूल सिद्धांत आधारित शिक्षा व्यवस्था सफलतापूर्वक लागू हो जाए, तो व्यक्तिगत स्तर पर चेतना विकास से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार, पारिवारिक स्तर पर मानव मूल्यों से संबंधों में मधुरता, सामाजिक स्तर पर सह-अस्तित्व से न्याय और शांति, राष्ट्रीय स्तर पर एकता और प्रगति, तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व शांति और सहयोग संभव हो सकता है। सह-अस्तित्व शिक्षा मॉडल के अनुसार "शिक्षा की भूमिका इस प्रकार प्रत्येक मानव को अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करने में सक्षम बनाना है ताकि वे अस्तित्व और मानव जीवन की इन वास्तविकताओं को समझ सकें जैसी वे हैं और तदनुसार जी सकें" (मध्यस्थ दर्शन)। यह एकीकृत दृष्टिकोण, व्यावहारिक सिद्धता, वैश्विक प्रासंगिकता, और भविष्य की संभावनाओं के साथ मानवता के लिए आशा की किरण है।

भविष्य में इस दर्शन के आधार पर व्यापक शैक्षिक सुधार, अनुसंधान और वैश्विक विस्तार की अपार संभावनाएं हैं। यदि हम इन सिद्धांतों को अपनी शिक्षा व्यवस्था में सफलतापूर्वक लागू कर सकें, तो मानवता एक नए युग में प्रवेश कर

सकती है जहां सह-अस्तित्व, न्याय और शांति का वास्तविक अनुभव संभव होगा। मध्यस्थ दर्शन क्या है के अनुसार "मध्यस्थ दर्शन आधुनिक अस्तित्व की जटिलताओं के बीच स्पष्टता की एक किरण के रूप में कार्य करता है" (मध्यस्थ दर्शन), और यही स्पष्टता शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला सकती है।

संदर्भ सूची

1. एवरीबडीविकी (EverybodyWiki). (2022). *मध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan)*. Retrieved from https://en.everybodywiki.com/Madhyasth_Darshan
2. जीवन विद्या (Jeevan Vidya). (2024). *दर्शन संक्षेप - जीवन विद्या सह-अस्तित्व कार्यशाला-शिविर (Philosophy Brief - Jeevan Vidya Coexistence workshop-shivir)*. Retrieved from https://jeevanvidya.info/more/philosophy-brief/
3. नागराज, ए. (2012)। मानव व्यवहार दर्शन: एक समग्र दृष्टिकोण। अमरकंटक: नागराज प्रकाशन।
4. मध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan). (n.d.). *शैक्षणिक दर्शन (Educational Philosophy)*. Retrieved from https://madhyasth-darshan.info/program/educational-philosophy/
5. मध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan). (n.d.). *सह-अस्तित्व शिक्षा मॉडल (The Coexistence Model of Education)*. Retrieved from https://jeevanvidya.info/more/coexistence-model-of-education/
6. मध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan). (n.d.). *जीवन विद्या कार्यशाला (The Jeevan Vidya Workshop)*. Retrieved from https://madhyasth-darshan.info/jeevan-vidya-intro-workshop/
7. मध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan). (n.d.). *मध्यस्थ दर्शन क्या है (What is Madhyasth Darshan)*. Retrieved from https://madhyasth-darshan.info/about/what-is-madhyasth-darshan/
8. नागराज, ए. (Nagraj, A.). (2008). *जीवन विद्या एक परिचय (Jeevan Vidya Ek Parichaya)*. जीवन विद्या प्रकाशन (Jeevan Vidya Prakashan).
9. नागराज, ए. (Nagraj, A.). (2008). *परिभाषा संहिता (Paribhasha Sanhita)*. जीवन विद्या प्रकाशन (Jeevan Vidya Prakashan).
10. Bhagwan, A. N. (2020). Madhyasth Darshan: Coexistential Thought. Jeevan Vidya Prakashan.
11. Jain, A. N. (2012). Understanding Human Values in Education and Society. Jeevan Vidya Mission.
12. UNESCO. (1996). Learning: The Treasure Within. UNESCO Publishing.
13. Capra, F. (1996). The Web of Life: A New Scientific Understanding of Living Systems. Anchor Books.

14. Davidson, R. J., & Begley, S. (2012). The Emotional Life of Your Brain. Hudson Street Press.
15. Siegel, D. J. (2007). The Mindful Brain: Reflection and Atunement in the Cultivation of Well-Being. W. W. Norton & Company.
16. Begley, S. (2007). Train Your Mind, Change Your Brain. Ballantine Books.
17. Raworth, K. (2017). Doughnut Economics: Seven Ways to Think Like a 21st-Century Economist. Chelsea Green Publishing.
18. Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.
19. Bhawna, A. N. (2020). Madhyasth Darshan: Coexistential Thought. Jeevan Vidya Prakashan.
20. Jain, A. N. (2009). Jeevan Vidya: A Way to Coexistence. Jeevan Vidya Mission.
21. Livio, M. (2002). The Golden Ratio: The Story of Phi, the World's Most Astonishing Number. Broadway Books.
22. नागराज, ए. (Nagraj, A.). (2010). *मानव अभ्यास (Manav Abhyas)*. जीवन विद्या प्रकाशन (Jeevan Vidya Prakashan).
23. नागराज, ए. (Nagraj, A.). (2010). *मानव कर्म दर्शन (Manav Karma Darshan)*. जीवन विद्या प्रकाशन (Jeevan Vidya Prakashan).
24. UNESCO. (1996). Learning: The Treasure Within. Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century. UNESCO Publishing.
25. नागराज, ए. (Nagraj, A.). (2012). *मानव व्यवहार का समग्र दृष्टिकोण (Holistic View of Human Behaviour)*. जीवन विद्या प्रकाशन (Jeevan Vidya Prakashan).
26. एनपीटीईएल (NPTEL). (n.d.). *व्यावसायिक नैतिकता की नींव के रूप में मध्यस्थ दर्शन (Madhyastha Darshan as the foundation of professional ethics)*. Retrieved from https://archive.nptel.ac.in/content/storage2/courses/109104068/lecture36/36_3.html
27. सिसोदिया, एम. (Sisodia, M.). (2019). *शिक्षा (Shiksha)*. पेंगुइन बुक्स (Penguin Books). ISBN: 0143448528.
28. यूनेस्को (UNESCO). (1996). *शिक्षा: अंतर्निहित खजाना - इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग की यूनेस्को को रिपोर्ट (Learning: The Treasure Within - Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century)*. यूनेस्को प्रकाशन (UNESCO Publishing).